श्री हनुमान चालीसा(अर्थ सहित)

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि

बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि

अर्थ:

मैं अपने मन रूपी दर्पण को गुरु के चरण-कमलों की धूल से साफ करके श्री राम के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – चारों फल देने वाला है।

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार

बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार

अर्थ:

अपने आपको बुद्धिहीन शरीर वाला जानकर मैं पवनपुत्र हनुमान का स्मरण करता हूँ। हे हनुमान जी! मुझे बल, बुद्धि और विद्या प्रदान करें तथा मेरे सभी क्लेश और विकार दूर करें।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर

अर्थ: हे हनुमान! आप ज्ञान और गुणों के सागर हैं। हे वानरराज! तीनों लोकों में आपकी कीर्ति प्रकाशमान है।

रामदूत अतुलित बल धामा

अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा

अर्थ: आप श्री राम के दूत हैं, अतुलनीय बल के धाम हैं। अंजनी माता के पुत्र और पवनपुत्र कहलाते हैं।

महाबीर बिक्रम बजरङ्गी

कुमति निवार सुमति के सङ्गी

अर्थ: हे महावीर, पराक्रमी, वज्र जैसे शरीर वाले! आप दुष्ट बुद्धि को दूर करते हैं और सज्जनों की अच्छी बुद्धि के साथी हैं।

कञ्चन बरन बिराज सुबेसा

कानन कुण्डल कुञ्चित केसा

अर्थ: आपका शरीर स्वर्ण के समान चमकीला है, सुंदर वस्त्र पहने हैं, कानों में कुंडल हैं और बाल घुंघराले हैं।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै

काँधे मूँज जनेऊ साजै

अर्थ: आपके हाथ में वज्र और ध्वजा शोभित हैं। कंधे पर मूंज का जनेऊ सुशोभित है।

शङ्कर सुवन केसरीनन्दन

तेज प्रताप महा जग बन्दन

अर्थ: आप शिव के पुत्र और केसरी के आनंददायी पुत्र हैं। आपका तेज और प्रताप समस्त जगत में वंदनीय है।

विद्यावान गुनी अति चातुर

राम काज करिबे को आतुर

अर्थ: आप विद्या के भंडार, गुणवान और अत्यंत चतुर हैं। श्री राम का कार्य करने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया

राम लखन सीता मन बसिया

अर्थ: आप प्रभु राम के चरित्र सुनने में रस लेते हैं। आपके मन में राम, लक्ष्मण और सीता सदा बसते हैं।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा

बिकट रूप धरि लङ्क जरावा

अर्थ: सूक्ष्म रूप धारण कर सीता जी को दर्शन दिया और भयंकर रूप लेकर लंका जला दी।

भीम रूप धरि असुर सँहारे

रामचन्द्र के काज सँवारे

अर्थ: भयंकर रूप धरकर असुरों का संहार किया और रामचंद्र का कार्य पूरा किया।

लाय सञ्जीवनि लखन जियाए

श्रीरघुबीर हरषि उर लाए

अर्थ: संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण को जीवित किया और श्री राम ने प्रसन्न होकर आपको हृदय से लगा लिया।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई

अर्थ: श्री राम ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा – तुम मुझे भरत के समान प्रिय भाई हो।

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं

अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं

अर्थ: सहस्र मुख वाले शेषनाग भी आपका यश गाते हैं – ऐसा कहकर श्री राम ने आपको गले लगा लिया।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा

नारद सारद सहित अहीसा

अर्थ: सनकादि मुनि, ब्रह्मा आदि देवता, नारद, सरस्वती और शेषनाग भी आपकी स्तुति करते हैं।

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते

कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते

अर्थ: यम, कुबेर, दिक्पाल आदि भी आपका पूरा यश नहीं बता सकते, फिर कवि-विद्वान क्या कहें?

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा

राम मिलाय राज पद दीन्हा

अर्थ: आपने सुग्रीव पर उपकार किया, उन्हें राम से मिलवाया और राज्य पद दिलाया।

तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना

लङ्केश्वर भए सब जग जाना

अर्थ: आपके मंत्र को विभीषण ने माना, वे लंका के राजा बने — यह सारा जगत जानता है।

जुग सहस्र जोजन पर भानू

लील्यो ताहि मधुर फल जानू

अर्थ: हजारों योजन दूर सूर्य को आपने मीठा फल समझकर निगल लिया।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं

जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं

अर्थ: राम की अंगूठी मुँह में रखकर समुद्र लाँघ लिया — इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

दुर्गम काज जगत के जेते

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते

अर्थ: जगत के जितने भी कठिन कार्य हैं, वे आपकी कृपा से सहज हो जाते हैं।

राम दुआरे तुम रखवारे

होत न आज्ञा बिनु पैसारे

अर्थ: राम के द्वार के आप रखवाले हैं, आपकी आज्ञा बिना कोई प्रवेश नहीं कर सकता।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना

तुम रक्षक काहू को डर ना

अर्थ: आपकी शरण में आने वाले को सब सुख मिलते हैं। जब आप रक्षक हैं तो किसी का डर नहीं।

आपन तेज सम्हारो आपै

तीनों लोक हाँक तें काँपै

अर्थ: अपना तेज आप स्वयं संभालते हैं। आपकी गर्जना से तीनों लोक काँप उठते हैं।

भूत पिशाच निकट नहिं आवै

महाबीर जब नाम सुनावै

अर्थ: महावीर का नाम सुनते ही भूत-पिशाच निकट नहीं आते।

नासै रोग हरै सब पीरा

जपत निरंतर हनुमत बीरा

अर्थ: वीर हनुमान का निरंतर जप करने से रोग नष्ट होते हैं और सब पीड़ा मिट जाती है।

सङ्कट तें हनुमान छुड़ावै

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै

अर्थ: मन, कर्म, वचन से ध्यान लगाने वाले को हनुमान जी संकट से छुड़ाते हैं।

सब पर राम तपस्वी राजा

तिन के काज सकल तुम साजा

अर्थ: तपस्वी राजा राम सबसे श्रेष्ठ हैं। उनके सब कार्य आप सहज बना देते हैं।

और मनोरथ जो कोई लावै

सोई अमित जीवन फल पावै

अर्थ: जो कोई मनोरथ लेकर आता है, उसे अमित जीवन-फल मिलता है।

चारों जुग परताप तुम्हारा

है परसिद्ध जगत उजियारा

अर्थ: चारों युगों में आपका प्रताप प्रसिद्ध है और जगत में प्रकाशमान है।

साधु सन्त के तुम रखवारे

असुर निकन्दन राम दुलारे

अर्थ: आप साधु-संतों के रक्षक हैं, असुरों का नाश करने वाले और राम के प्रिय हैं।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता

अस बर दीन जानकी माता

अर्थ: आठ सिद्धियाँ और नौ निधियाँ देने वाले हैं। यह वरदान सीता माता ने दिया है।

राम रसायन तुम्हरे पासा

सदा रहो रघुपति के दासा

अर्थ: आपके पास राम-रसायन है। आप सदा रघुनाथ के दास बने रहिए।

तुम्हरे भजन राम को पावै

जनम जनम के दुख बिसरावै

अर्थ: आपका भजन करने से राम मिलते हैं और जन्म-जन्म के दुख भूल जाते हैं।

अन्त काल रघुबर पुर जाई

जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई

अर्थ: अंत समय राम के धाम में जाते हैं और जन्म लेने पर हरि-भक्त कहलाते हैं।

और देवता चित्त न धरई

हनुमत सेइ सर्व सुख करई

अर्थ: अन्य देवताओं को मन में न रखकर केवल हनुमान की सेवा करने से सब सुख मिलते हैं।

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा

अर्थ: जो वीर हनुमान का स्मरण करता है, उसके सब संकट कट जाते हैं और पीड़ा मिट जाती है।

जय जय जय हनुमान गोसाईं

कृपा करहु गुरूदेव की नाईं

अर्थ: हे हनुमान गोसाईं, जय हो! गुरु की तरह मुझ पर कृपा कीजिए।

जो सत बार पाठ कर कोई

छूटहि बन्दि महा सुख होई

अर्थ: जो सौ बार पाठ करे, वह बंधनों से मुक्त होकर महासुख पाता है।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा

होय सिद्धि साखी गौरीसा

अर्थ: जो यह चालीसा पढ़ता है, उसे सिद्धि प्राप्त होती है – इसके साक्षी गौरीनाथ (शिव) हैं।

तुलसीदास सदा हरि चेरा

कीजै नाथ हृदय मँह डेरा

अर्थ: तुलसीदास सदा हरि का सेवक है। हे नाथ, मेरे हृदय में निवास कीजिए।

अंतिम दोहा

पवन तनय सङ्कट हरन मङ्गल मूरति रूप

राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप

अर्थ: हे पवनपुत्र, संकट हरने वाले, मंगलमय रूप! राम, लक्ष्मण, सीता सहित मेरे हृदय में निवास कीजिए।

जय श्री राम

जय हनुमान जी महाराज